Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2
ISSN No: 3049-4176

'बहु–जुठाई' में पारिवारिक संरचना के भीतर स्त्री की पीडा और संघर्ष

डॉ. नवीन
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, हिन्दू कॉलेज, सोनीपत

शोध–सार
प्रस्तुत शोध रेणुका गुप्ता के कहानी–संग्रह 'बहु–जुठाई' में चित्रित स्त्री शोषण का समीक्षात्मक अध्ययन करता है। यह अध्ययन विशेष रूप से पारिवारिक ढाँचे के भीतर स्त्री की सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक पीड़ा को केंद्र में रखता है। कहानियों के माध्यम से लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि स्त्री शोषण केवल बाहरी समाज तक सीमित नहीं, बल्कि घर की चारदीवारी के भीतर भी वह निरंतर उपेक्षा, अत्याचार और असमानता का शिकार होती है। शोध में यह दर्शाया गया है कि स्त्री को पारंपरिक भूमिकाओं में बाँधकर उसकी स्वतंत्रता और पहचान को सीमित किया जाता है। विवाह, ससुराल, आर्थिक निर्भरता और पितृसत्तात्मक सोच स्त्री के जीवन को नियंत्रित करती है। लेखिका ने यथार्थवादी शैली में स्त्री के अंतर्द्वंद्व, मौन पीड़ा और आत्मसंघर्ष को उकेरा है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि 'बहु–जुठाई' केवल कथा–संग्रह नहीं, बल्कि स्त्री चेतना का सशक्त दस्तावेज है, जो समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता और शोषण की प्रवृत्तियों पर गहरा प्रश्नचिह्न लगाता है। आधुनिक संदर्भ में यह रचना स्त्री सशक्तिकरण और समान अधिकारों की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

मुख्य शब्द: रेणुका गुप्ता, बहु–जुठाई, स्त्री शोषण, पितृसत्तात्मक समाज, पारिवारिक उत्पीड़न, स्त्री चेतना, लैंगिक असमानता, मानसिक पीड़ा, सामाजिक यथार्थ, स्त्री संघर्ष।

'बहू–जुठाई' कहानी–संग्रह रमणिका गुप्ता की संवेदनाओं एवं सामाजिक प्रतिबद्धताओं को प्रकट करता है। झारखंड के छोटा नागपुर जिले में रहने के दौरान उन्हें जो मर्मस्प ीं अनुभव हुए उनका निचौड़ है– 'बहू–जुठाई'। इस कहानी संग्रह में कुल ग्यारह कहानियाँ है–

(1) चिड़िया (2) चमेली (3) बहू–जुठाई (4) चन्दा मर नहीं सकती
(5) परबतियाँ (6) जिरवा और जिरवामाय (7) प्यारी (8) खुश रहो
(9) जिन्दा रहने के लिए (10) ललिता (11) वह जिएगी अभी

बहू–जुठाई कहानी संग्रह में दो कहानियाँ 'चिड़िया' और 'वह जिएगी अभी' आरमकथात्मक शैली में लिखी गयी हैं। 'चिड़िया' कहानी में वर्तमान युग की जटिलता में धरा ायी होते सम्बन्ध, भावनाहीन रि ते और एकदम नितांत अकेले पड़े व्यक्ति की कहानी है। 'वह जिएगी अभी' कहानी प्रबुद्ध महिला की कहानी है, जो स्वयं संघर्षरत है अपने अस्तित्व के लिए। इस कहानी संग्रह की अधिकतर नायिकाएँ सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

'बहू–जुठाई' की नायिकाएँ लेखिका के जीवन के खट्टे–मीठे, कड़वे अनुभवों के रंगों से रंगी खुरदरी किन्तु जीवंत व्यक्तित्व वाली महिलाएँ है। चूंकि रमणिका गुप्ता ने स्वयं कहा है कि मैंने कभी 'स्वांतः सुखाय' नहीं लिखा। उन्होंने जो भी लिखा धरती पर भोगे हुए, महसूस किए हुए यथार्थ को लिखा 'सच' लिखा। चाहे वह सच नग्न हो, विकृत हो, घृणित हो, पर यथार्थ का समावेश कभी कम नहीं होने दिया। ''स्वार्थों की टकराहट में चट्टानी एकता तो टूटती है और पिसती है, उसमें सबसे अधिक औरत। मर्द औरत का एक और बंटवारा व्याप्त है। चाहे मजदूर समाज हो, चाहे किसान–सर्वहारा हो, चाहे मध्यम या उच्च, चाहे छोटी जात हो या बड़–जात, पुरुष अहम औरत को एक ही नजर से देखता है– वह है उसका यौन–आकर्षण।'' स्पष्ट है कि 'बहू–जुठाई' कहानी–संग्रह समाज द्वारा स्त्री–शोषण और उस शोषण के पीदे छिपी स्त्रियों की वेदना, त्रास और दुःख को प्रकट करती है। किसी रचानाकार द्वारा दलित विषयक एवं दलित केन्द्रित रचना तो 'बहू–जुठाई' है ही। शायद ही किसी स्त्री रचनाकार द्वारा स्त्री–विमर्शक कहानी संग्रह भी इसे कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। स्त्री तो स्त्री है चाहे न कभी हर स्त्री को महसूस होती है। मर्द के पौरूषत्व के अहम् से टकराहट तो जीवन में कम से कम दो–चार बार तो हो ही जाती है और उनके वहशी नजरों की शिकार तो हर स्त्री होती ही है। इस कारण से भी 'बहू–जुठाई' कहानी संग्रह रमणिका गुप्ता द्वारा रचित है। इसलिए स्त्री–शोषण भी वास्तविक रूप में ही उभर कर आया है। यहाँ कह सकते हैं कि एक स्त्री द्वारा स्त्री के शोषण पर प्रकाश डाला गया।[1]

आदिम युग से बाहर निकलकर ज्यों–ज्यों मनुष्य सभ्यता–संस्कृति की गोद में जा बैठा, वह खुद को दूसरों से श्रेष्ठ, समझदार एंव भिन्न साबित करने हेतु उसके मनुष्य एवं उसकी मनुष्यता को खेमों में बांटना शुरू कर दिया। धर्म, जाति एवं वर्ग की दीवार ने मनुष्यों को बांट दिया। सारी मनुष्यता खेमों में बंट गई, लेकिन उन खेमों के भीतर भी एक बंटवारा हुआ वह था। स्त्री–पुरुष का। शायद दुनिया से कभी धर्म, जाति एवं वर्ग संघर्ष मिट भी जाए। मगर लिंग–भेद की इस दीवार का ढह पाना मुश्किल सा लगता है। पुरुष चाहे स्त्री को जितना प्रेम कर ले, लेकिन कभी भी स्त्री के अस्तित्व को खुद के बराबर समझने की भूल नहीं कर सकता। स्त्री चाहे कितनी भी रूपमती, गुणमति हो मगर पुरुष अहं के सामने इसका कद बौना ही होता है। प्यार के, समर्पण के, अंतरंगता के सारे क्षण बेमानी हो जाते है, जब पुरुष अपनी प्रेयसी को, अपनी पत्नी को सम्पि ा मान उसे संभाल कर रखने या फिर किसी को दान में देने की बात करता है।

'प्यारी' शीर्षक कहानी की नायिका 'प्यारी' को उसका पति 'शीतल' प्रेम भी करता है, मनुहार भी। लेकिन यह बात कभी भूल नहीं पाता कि वह पुरुष है। उसका 'अस्तित्व' बड़ा है अपनी 'पत्नी' से। 'पत्नी' तो उसकी निजी 'संपत्ति' है और संपत्ति की भी भला कोई मर्जी होती है। यहीं सोचकर 'शीतल' ने दारू के नशे में पहले तो 'प्यारी' को ही दांव पर लगा दिया। दूसरा

बिना उसकी मर्जी के उसको फागू के पास भेजने की जिद करने लगा। जब 'प्यारी' नहीं मानी, तो उसने अपने अहं की संतुष्टि के लिए उसकी नाक ही काट ली। ''शीतल सोच रहा था यह नाक ही है न, जिसका उसे घमंड है, जो मेरी बात नहीं मानती। उसने प्यारी की नाक को छुआ, जैसे मुर्गी की मुंडी पकड़ रहा हो।''[2]

यह पुरुष मानसिकता ही है जब उसे स्त्री के प्रति प्यार दिखाना, तो उसकी 'देह' ही पहले नजर आती है। और जब नफरत प्रदर्शित करनी हो, तो स्त्री के आत्मसम्मान को कुचलने के लिए भला उसी 'देह से बढ़कर क्या होगा? 'परबयिा' कहानी की नायिका को उसका पति पसंद नहीं करता क्योंकि उसने अपनी भाभी के साथ नाजायज संबंध बना रखा है। माता–पिता एवं समाज के दबाव में आकर वह ऊपर से 'परबतिया' को स्वीकार तो कर लेता है, पर प्रेम–प्रदर्शित करने के लिए नहीं बल्कि घृणा प्रदर्शित करने के लिए। यह कैसी पुरुष मानसिकता? जब किसी मर्द को अपराधबोध से मुक्ति पानी हो तो वह कमजोर स्त्री–देह को ही अपना शिकार बनाता है। स्त्री शोषण का यह पारिवारिक स्वरूप सर्वत्र शोषित है। कभी–कभार उसका पति उसे अपनी हवस का शिकार तो बनाता पर जैसे कोई अपराध हो गया हो और उस अपराध –बोध से मुक्ति पाने के लिए वह उसे खूब पीटता। खटिया के नीचे उसकी हथेलयित्र रखकर खुद खटिया पर बैठ जाता और कूदता। परबतिया पीड़ा से चिल्लाती।

उच्च्य वर्ग किस तरह दलितों के ऊपर अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए 'बहू–जुठाई' को प्रश्रय देता है। इस बात का प्रमाण 'बहू–जुठाई' कहानी से प्राप्त होता है। गाँव के जमींदार जो सवर्ण है, उसकी यह मानसिकता है कि दलित उसका जूठन खाने को ही पैदा हुए है, यहाँ तक कि उन्हें अपनी पत्नी का 'कौमार्य भंग' कर पहली रात उससे सुहागरात मनाने का अधिकार भी ठाकुर को है। उसके ससुराल की बजाय दलित दुल्हन की डोली अपने द्वार पर रूकवाता है। जब तक उसका मन नहीं भरता, वह नई दुल्हन को उसके पति के घर नहीं भेजता। इस प्रकार वह दलित पुरुषों को खुद से हेय साबित करता है। क्या यह प्रथा केवल पुरुषों (पतियों) को ही आघात पहुँचाने वाली थी? क्या नई दुल्हन की चुपचाप सिसकती आहों की कहानी नहीं कहती यह प्रथा। नफरत–घृणा किसी से प्रदर्शित करनी हो स्त्री या पुरुष से। लेकिन स्त्री ही शोषित होती है, शिकार होती है। यह प्रथा हमें एक बार सोचने पर मजबूर जरूर करती है कि हर वर्चस्व की लड़ाई के पीछे स्त्री ही क्यों दांव पर लगती है? पुरातन काल से ही कौरव–पांडवों को नीचा दिखाने द्रौपदी (स्त्री) को ही क्यों चुना था? अपन गाँव में तो केकरों से कहना–सुनना बेकार हय। केकरा पर विवशता कर अय। सभी की बहू तो ठाकुर जुठालय है, और सभे के माय ठाकुर साहब के बाप।

रमणिका गुप्ता के 'बहू–जुठाई' कहानी संग्रह के माध्यम से स्त्री–शोषण के बहुआयाम स्वरूपों की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करने की चेष्ट की है। दलित स्त्रियों की उन अनकहीं

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

पीड़ाओं को कहानी के पात्रों के माध्यम से हमारे सम्मुख लाया गया है। मारपीट, गाली–गलौच, रखेलगिरी, बलात्कार बेमेल विवाह, अनचाहे गर्भ के अनन्त सिलसिले, असुरक्षित प्रसव डायन–दहन आदि यातनाकारी कष्टों ने स्त्री को शोषित बना कर रखा है।

रमणिका गुप्ता ने दलित समाज में प्रचलित विवाहेत्तर संबंधों या फिर शादी–ब्याह से संबंधित लचीले नियम कानूनों का जिक्र, कहीं न कहीं स्त्री–पीड़ा की अभिव्यक्ति के लिए दिया है। कहने को तो स्त्रियां दलित समाज में, मध्यम वर्ग की स्त्रियों से कहीं ज्यादा स्वतंत्र है, क्योंकि वह आत्मनिर्भर होती है। पति चुनने एवं उसके साथ जीवन पर्यंत रहने को विवश नहीं होती। शादी यहाँ मध्यमवर्गीय सामंती समाज की तरह सात जन्मों का रिश्ता नहीं होती। लेकिन यह सारी बातें 'सतही सच है, दलित स्त्रियों को आर्थिक, सामाजिक आजादी तभी मिली होती है। जब परिवार के मर्द सदस्यों को उसके फैसले में रजामंदी हो। वरना उन स्त्रियों की काफी दुर्गति होती है। उसे नंगा कर पीटा जाता, 'डायन करार देकर उसे मैला घौलकर पिलाना, अंतर्जातीय विवाह करने पर उसके जननांगों को लुकाठी से दाग दिया जाना, दलित समाज की स्त्रियों की बेबसी का प्रमाण है। ''वह औरत है इसलिए सब कोई उस पर नजर गड़ाता है, चाहे बाप की उम्र का उसका पति हो, चाहे मुंशी, चाहे सावजी, जो पहले उसी खदान को ठेकेदार था और सारे विलासपुरी मर्द, जो अपने तो रोज डौकी (औरत) बदल लाते हैं, नई–नई ले आते हैं, पर अपनी डौकी की झूठी बदनामी कर, उसे कहीं का नहीं छोड़ते। अभी तो गनीमत है, उसे नहीं कहा किसी ने'।

एक चीज जो हर जगह समान 'स्त्री अपनी देह से इतर प्राणी मानी जाए, ऐसा हो ही नहीं सकता। 'स्त्री–देह' है चाहे वह उच्च वर्गीय हो, मध्यवर्गीय या फिर चिथड़ों से लिपटी, गंदगी से सनी जटा–जूट दलित स्त्री। पुरुष की गिद्ध दृष्टि तो सब पर एक समान ही पड़ती है। इस तरह स्त्री शोषण हर वर्ग में किया जाता है।

'जिखा और जिरवा माय' कहानी दो मुख्य पात्रों माँ और पुत्री के जीवन के इर्द–गिर्द घूमती है। माँ बेटी दोनों की जिंदगी में काफी साभ्यता है। दोनों का मर्दों ने उपयोग किया है। अपनी स्वार्थ की खातिर उन्हें बहला–फुसलाकर अन माँ–बेटी के देह का शोषण किया। उनममें अपना मतलब पूरा होने के बाद उसने मुहं फेर लिया और जब उन्होंने अपने हक या अधिकारों की बात की, तो उन्हें प्रताड़ित भी किया है।

पुरुष चाहे कितनी स्त्रियों के साथ परगमन करे, मगर यदि स्त्री अपने पति की अनुपस्थिति एव ंअपेक्षा की वजह से अगर किसी एक भी परपुरुष के साथ यौन संबंध बना ले, तो वह कुलटा, पतिता बन जाती है। जिरवा की माय का पति दो बच्चे रघुनाथ अैर जीखा के पैदा होने के बाद उसे छोड़कर इस प्रकार गया कि सात वर्षों तक मुहं फेरकर नहीं देखा, इस बीच जिरवा की माय का मन कोयरी से लग बैठा और गर्भवती हो बैठी। समाज के तथाकथित ठेकेदारों ने उसे इस बात के लिए बिरादरी से निकाल दिया उसके पति के ऊपर किसी ने

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

उंगली नहीं उठाई, जो सात वर्षों से उससे, अपने बच्चों से एवं अपने दायित्वों से मुहं मोड़कर बैठा था।

''जिरवा की माँ और उसके पेट में पल रही औलाद दोनों ही उसके पति की संपत्ति में हकदार नहीं होगें और जिरवा–माय का पति चाहे तो दूसरा बिआह (विवाह रचा सकता है। पंचों ने दंड सुनाया। अगले दिन तेली टोला छोड़ देने की हिदायत के साथ जिरवा–माय समाज से बहिष्कृत कर दी गई।''

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पुरुष ने स्त्री को औजार मानकर उसका भरपूर शोषण किया है। स्त्री आदिकाल से ही पीड़ित एवं शोषित होती रही है। पुरुष प्रधान समाज सम्मान और मान–मर्यादा की आड़ में सदैव उसे दबाकर रखता आया है। समाज की वास्तविक सच्चाई यहीं है कि उसे पुरुषों के मुकाबले आज भी दोयम दर्जा दिया जाता है। उसे एक संपत्ति, एक वस्तु ही मान लिया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. रमणिका गुप्ता, बहू–जुठाई, भूमिका : खटने कमाने वाली औरते शिल्पायन प्रकाशन, पृ. 10
2. रमणिका गुप्ता, बहू–जुठाई (प्यारी), पृ. 102
3. रमणिका गुप्ता, बहू–जुठाई (परबतिया), पृ. 67
4. रमणिका गुप्ता, बहू–जुठाई, जिरवा और जिरवामाय, पृ. 80